अमृत वाणी

संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है।

-स्वामी शिवानंद,

नहीं बदल सकता पाक अपनी फितरत

पाकिस्तान कभी भी अपनी फितरत, अपना चरित्र या व्यवहार नहीं बदल सकता। चाहे कितनी वार्ताएं हों, बैठके हो या फिर दबाव ही क्यों न हो। उस पर किसी का भी कोई असर नहीं होता। वह मात्र एक ही भाषा समझता है और वह है गोली के बदले गोली। इससे बढ़कर हैरत की बात क्या हो सकती है कि पूरा रमजान का महीना उसने खून खराबा करते हुए बीता दिया। एक गैर इस्लामिक देश होते हुए भी भारत ने रमजान के पाक उद्देश्य को समझकर सीमा पर महीने भर से अपनी ओर से युद्ध विराम की घोषणा कर रखी है। सुरक्षा बलों को साफ निर्देश दिया गया है कि पहली गोली वे अपनी ओर से नहीं चलाएं। तदनुसार हमारे सुरक्षा बलों ने भी पूरी संयम से अपनी ड्यूटी निभाई मगर पाकिस्तान संभवतः इसे भारत की कमजोरी समझ बैठा है। इसलिए बार-बार संघर्ष विराम का उल्लंघन कर भारतीय सीमा में गोलीबारी करने का क्रम जारी रखे हुए हैं। आतंकवादियों का तो कोई धर्म होता ही नहीं है। कहने को वे इस्लाम की बड़ी-बड़ी बाते जरूर करते है मगर संभवतः उसका मतलब ही नहीं समझते। यही वजह है कि उनके लिए किसी पर्व त्योहार या उसके निहित उद्देश्यों का कोई महत्व नहीं होता लेकिन लानत है पाकिस्तान जो है तो एक इस्लामिक देश पर उसकी गतिविधयां सर्वथा उल्टी है। तभी तो रमजान के पाक मौके पर भी सीमा पर बड़े पैमाने पर खून खराबा करने पाकिस्तानी रेंजरों ने घात लगाकर सीमा प्रहरियों पर हमला किया। एक बार नहीं कई कई बार पाकिस्तान अपने ये घटिया कारनामे करता जा रहा है।

शीघ्र ही अमरनाथ यात्रा शुरू होने वाली है। लाखों यात्री इस दौरान भोले बाबा के दर्शन के लिए जाएंगे। आतंकवादियों और सीमा पार से बढ़ती हिंसा के मद्देनजर उनकी सुरक्षा भी एक चुनौति बनी हुई है। इन्ही तमाम बातों को ध्यान में रखकर ही संभवतः सेना ने सरकार को संघर्ष विराम की अवधि बढ़ाने के खिलाफ चेताया है। सरकार अंततः क्या फैसला लेता है यह तो आने वाला समय बतायेगा। परेशानी यह है कि रमजान के नाम पर आतंकवादियों के खिलाफ आपरेशन बंद होने से उनकी सक्रियता बढ़ गई है तथा वे सुरक्षा बलों को लगातार निशाना बनाने में लगे हैं।

राजकाज

बाबा के भक्त ही बाबा के दुश्मन बने

इन दिनों शनि महाराज की वक्र दृष्टि बाबाओं पर पड़ रही है। पिछले कई माहों में कई बाबा अपने भक्तों के कारण संकट में है। बाबाओं का भी राजयोग, भौतिक सुख सुविधाओंऔर बाबाओं के आश्रम में लक्ष्मी का निवास होने से बाबा लोग भी भोग विलास में लिप्त होकर भक्तों को जो मार्ग दिखा रहे थे। अब उनके ही भक्त अपने बाबाओं को लूटने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। पहले बापू आसाराम, बाबा राम रहीम, शनिधाम के दाती महाराज और कई बाबा अपने भक्तों के कारण इन दिनों संकट में हैं। बाबाओं की संगत में रहते हुए भक्त भी अब बाबाओं से तरह किस तरह पैसा निकाला जाता है। इसमें माहिर हो गए हैं। बाबा रामदेव को लेकर भी यूट्यूब में कोई महिला सक्रिय हो गई है। ज्योतिष के पंडितों का कहना हैं कि कर्म का फल निश्चित है। समय आने पर ही फलित होता है। अब बाबाओं के कर्म उन पर ही भारी पड़ रहे हैं। भय्यूजी महाराज द्वारा खुद को गोली मारकर आत्महत्या करने के घटना उनके राजपाट से जोड़कर देखी जा रही है। बाबाओं के राजकाज में भक्तों की यह वक्र दृष्टि बाबाओं पर बड़ी भारी पड़ रही है।

भाजपा और आप के बीच शह और मात का खेल

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने एलजी ऑफिस में धरना और आमरण अनशन करके दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर और केंद्र की भाजपा सरकार को मुश्किलों में डाल दिया है। केजरीवाल की इस हरकत के जवाब में भाजपा ने मोर्चा संभाला। दिल्ली सचिवालय में आम आदमी पार्टी के निलंबित विधायक कपिल मिश्रा और भाजपा के तीनों विधायक धरने पर बैठ गए। अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी भी अपनी अंतिम लड़ाई लड़ने सड़कों पर आ गई है। दिल्ली की जनता को स्वतंत्रता से जोड़कर दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने और घर.घर राशन पहुंचाने, सीसीटीवी कैमरे, प्रदूषण को लेकर केंद्र सरकार, एलजी और आईएएस अधिकारियों पर निशाना साधा है। इससे भाजपा भी अब हतप्रभ है। शह और मात के इस खेल में जीत किसकी होगी, यह कहना बड़ा मुश्किल है। आम आदमी पार्टी और भाजपा दोनों ही लड़ने की मुद्रा में है।

हल्दीघाटीः हक और साम्राज्यवाद का द्वंद

आज महाराणा प्रताप जयंती पर विशेष

हल्दीघाटी को स्थानीय "हक"और शाही साम्राज्यवाद के बीच की लड़ाई कहा जा सकता है। पीली घाटी की रेत तब मानव रक्त से लाल हो गई थी। प्रताप मेवाड़ राज्य को अपनी क्षेत्रीय अस्मिता के साथ अक्षुण्ण रखना चाहते थे। उनके साथ थे अपने राजपूती सम्मान और गौरव की रक्षा को समर्पित सभी धर्मों एवं समुदायों के लोग। जो कुछ भी कर गुजरने को तत्पर थे। महाराणा प्रताप की सेना का तोप संचालन सेनापति हकीम खां सूर कर रहे थे। पठान वीरों का एक बहुत बड़ा समूह महाराणा के साथ मुगलों की शाही सेना से लड़ रहा था। हकीम खां के नेतृत्व में चूड़ावत किशनदास सालम्भर भीमसिंह सरदारगढ़ रावत सांगा देवगढ़ तथा बाडनोर के राठौर रामदास जैमल के पुत्र मेवाड़ी सेना में थे। घाटी के मुहाने पर प्रथम पंक्ति के ये वीर हारावल दस्ता की अगुवाई कर रहे थे। प्रताप ने दायीं ओर से मुगल सेना को घेर लिया था। हीकीम खां की रणनीति में मुगल सेना फंस चुकी थी। मैदान छोड़ना ही उनकी नियति बन चुकी थी। विजयश्री प्रताप की सेना को मिली। युद्ध थमा पर समाप्त नहीं हुआ। अकबर की शाही सेना का नेतृत्व अम्बेर के राजा मानसिंह प्रताप के विरुद्ध कर रहे थे। अन्ततरू प्रताप के नायक वीरगति को प्राप्त हुए।

वर्तमान काल में हिन्दू मुस्लिम साप्रदयिक दंगों को भड़काने वाले या गुमराह आतंकवादी हल्दीघाटी के इस ऐतिहासिक युद्ध से अनभिज्ञ है। जहां हक की लड़ाई के लिए महाराणा प्रताप सिंह की सेना की अगुवाई हकीमखां सूर कर रहे थे जो इस्लाम मजहब को मानते थे जबकि अकबर की साम्राज्यवादी शाही मुगल सेना के सेनापति राजा मानसिंह एक राजपूत थे। बादशाह अकबर को उन्होंने अपनी बहन दी थी और इस रिश्ते से वे उनके साले थे। एक तरफ हकश सम्मान और अस्मिता का संघर्ष था तो दूसरी और साम्राज्यवादी शाही सेना की राज्य विस्तार की ललक और अकबर की हिन्दुस्तान के जहांपनाह बनने की लालसा और ललक थी। प्रताप एवं स्थानीय लोगों के सम्मान के लिए सौहार्द की लड़ाई हक की खातिर हकीम खां लड़ रहा था और राजपूतों के मान मर्दन की लड़ाई अकबर के लिए राजा मानसिंह। ये दो संप्रदायों की लड़ाई नहीं थी। स्वाधीनता और साम्राज्यवाद के बीच का द्वंद्व था।

युद्ध की पृ7भूमि के इतिहास का विश्लेषण करें तो जो तथ्य सामने आते हैं वे बड़े रोचक,

ढलता सूर्य दर्शनीय ही नहीं सुंदर और अदभुत भी होता है। उसके चारों ओर का आकाश सूर्य के डूबने के बाद भी काफी देर तक उसके प्रकाश से आलोकित रहते हुए रंगीन बना रहता है। समुद्र के एक छोर पर खड़े होकर ढलता सूर्य निहारने का अनुभव वास्तव में सम्मानीय एवं स्मरणीय होता है। प्रकृति के प्रति मानव की आस्था इससे मजबूत होती है। पहाड़ों के बीच पीछे ढलता सूर्य अनोखा एवं आदरणीय प्रतीत होता है। भारतवर्ष में सूर्य की पूजा होती है। राजपूतों में सूर्यवंशी सम्मान से देखे जाते हैं। पश्चिम भारत के राजस्थान के उदयपुर के पास 40 किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रेणी की फैली श्रृंखलाओं में जर्द पीले रंग की घाटी है जिसे रंगत के कारण ष्हल्दीघाटीश् के नाम से जाना जाता है। यह स्थान एक ओर पाली और दूसरी ओर राजसमन्द जिले को जोड़ता है। इसी हल्दीघाटी में सन् 1576 में मेवाड़ के राणा प्रतापसिंह और अकबर की मुगल शाही सेना के बीच ऐतिहासिक युद्ध हुआ था। प्रताप के सूर्य का प्रबल प्रताप, सम्मान, सोहार्द और हक के लिए आज भी हमारी आत्मा को लौहित अवसान के साथ गौरवान्वित करता है।

घात.प्रतिघात, युवराजाओं, और रानियों के सौतन ढाह का यर्थाथ दीदार कराते हैं । 1567 में महाराज कुमार प्रताप सिंह 27 वर्ष के थे जब अकबर की सेना ने मेवाड़ की राजधानी चितौड़ को घेर लिया था। उनके पिता महाराजा उदयसिंह द्वितीय ने अपने परिवार के साथ चितौड़ को त्याग दिया और गोगुन्दा नामक स्थान पर रहने लगे। प्रताप चितौड़ में रहकर मुगल सेना से लड़ना चाहते थे पर परिवार का दबाव था। चितौड़ क्या छूटा इतिहास ही बदल गया। गोगुन्दा में अस्थायी शासन की स्थापना की गई। 1572 में मेवाड़ नरेश की मृत्यु हो गई। महाराजा कुमार प्रताप को गद्दी पर बैठना था। उधर उदयसिंह की प्रिय महारानी भटियानी अपने बेटे जगमल को मेवाड़ का राजा बनाना चाहती थी। तत्कालीन नियमानुसार राजा के अन्तिम संस्कार में महाराज कुमार शामिल नहीं हो सकता था क्योंकि वही बाद में राजा की गद्दी पर बैठता है परन्तु प्रताप ने अपने पिता की अंत्येष्टि में भाग लिया । शव को कांधा दिया। परंपरा टूट गई। प्रताप राजा उदयसिंह के 25 पुत्रों में ज्ये7 थे। पर उन्होंने जगमल को राजा बनाने की बात मान ली। परंतु मेवाड़ के हित में चूड़ावत राजपूतों ने इसका विरोध किया। जगमल मेवाड़ को छोड़ अजमेर चले गए और अकबर की सेना से जा मिले। अकबर ने उन्हें जहाजपुर जागीर बख्शीश में दी। अंततरू महाराणा प्रताप सिंह प्रथम मेवाड़ के 54 वें सिसोदिया सम्राट बने। महाराणा को अपने पिता की मृत्यु विवशता और जीवन में फिर कभी चितौड़ न लौट पाने की चाह शूल की तरह चुभती थी। ठीक वैसे, परंतु नकारात्मक शूल अकबर को प्रताप के कारण चुभता था। जो उसकी सत्ता को नहीं स्वीकारता था और उसके हिन्दुस्तान के जहांपनाह बनने में सबसे बड़ी बाधा था।

चितौड़ का महल, पुराना किला, माटी प्रताप को बहुत याद आती थी। वे विह्वल हो उठते थे। चितौड़ पर अकबर काबिज था पर मेवाड़ उसके साम्राज्यवाद का हिस्सा न बन सका था। प्रताप उसके स्वपन साकार की सबसे बड़ी बाधा थी। अकबर ने अनेक कूटनीतिज्ञों को, एक नहीं दो, नहीं, छः बार प्रताप को अपनी सत्ता स्वीकार कराने के लिए भेजे। अंत में अपने साले मानसिंह को भेजा। प्रताप एक राजपूत को इस तरह से अकबर के पक्ष से दलील देने पर आगबबूला हो उठे। उधर अकबर ने निर्णय कर लिया था कि अब प्रताप के स्वाभिमान को युद्ध से ही ललकारा जा सकता है। अकबर ने कुंवर सागर सिंह प्रताप के एक अन्य भाईद्ध को राजधानी चितौड़ का शासक नियुक्त कर दिया। सागर सिंह इस छलावे से इतने आहत हुए कि अकबर के दरबार में ही उन्होंने अपनी ही तलवार से आत्महत्या कर ली। प्रताप का एक अन्य भाई शक्तिसिंह जो अकबर के दरबार में था। प्रताप को अकबर के आक्रमण की पूर्व जानकारी देने वहां से निकल पड़ा। युद्ध की स्थिति बनते देख मेवाड़ की राजधानी महाराणा अपनी जन्मस्थली कुंभलगढ़ ले गए। राणा की आज्ञा को शिरोधार्य कर लोग चल पड़े। अरावली के भील महाराणा पर न्यौछावर थे। मेवाड़ में दिल्ली से सूरत जाने वाले व्यापारी काफिलों को वे लूट लेते थे, महाराणा ये सब न चाहते हुए देख रहे थे। अपने लोगों की जनइच्छा और स्वतंत्रता के वे प्रबल पक्षधर थे। वे जंगली फलफूल और घास पर निर्भर हो गए और धरती पर सोने लगे। उन्होंने दाढ़ी मूंछें शेव न कर रखने लग। मिट्टी और बांस के घर में उनका बसेरा हो गया।

वैश्य श्रे7 भामाशाह ने धन द्वारा सहायता कर 12 वर्ष तक 25000 सैनिकों को आर्थिक भरण पोषण देकर एक अनोखी मिसाल कायम की। वहीं उनके काठियावाड़ी अश्व चेतक ;घोड़ेद्ध की अकल्पनीय साहस और स्वामीभक्ति मानव के ष्पशुमित्रश् की विश्व में एक अनोखी मिसाल है। घास की रोटी और वह भी उनकी औलाद को नसीब न हो पाना। इस घटना से विचलित महाराणा का अकबर को पत्र लिखना। अकबर की बांछे खिल उठना और वहां अकबर के दरबार बीकानेर के राजा रायसिंह के भाई पृथ्वीराज द्वारा प्रताप के पत्र को जाली बताना और अकबर को उसकी जांच करने की बात करना प्रताप के सम्मान को अक्षुण्ण रखते हुए पूरी बाजी को पलट देना.प्रताप के प्रताप का प्रतिफल है।

उधर अकबर पंजाब और सीमांत प्रांत के युद्धों में उलझ चुका था। प्रताप ने इस बीच मेवाड़ के काफी हिस्सों को मुक्त करा लिया। उदयपुर, कुंभलगढ़ आदि चितौड़ को मुक्त न करा पाए। प्रताप हिन्दू समुदाय के जीवन और प्रकाश दोनों थे पर अन्य समुदाय के मेवाड़ी, पठान, वैश्य, भील सभी उनका सम्मान करते थे। 56 वर्ष की आयु में महाराणा प्रताप आखेट की एक दुर्घटना में जख्मी हो गए और 29 जनवरी 1597 को उनका निधन हो गया।

महाराणा प्रताप की देसी तिथि से आज उनकी जन्म तिथि है, परंतु हमें इसे एक मानवीय स्वतंत्रता, सामुदायिक सम्मान और क्षेत्रीय अक्षुण्णता के संदर्भ में समझना होगा कि मानवीय स्वाधीनता के संदर्भ में एक हक की लड़ाई कैसे त्याग और बलिदान व सहयोग से लड़ी जाती है। जिसमें धर्म, धन, जाति, रंग, नस्ल का महत्व मानव सम्मान सौहार्द और स्वतंत्रता के आगे कुछ भी नहीं होता।

बलदेवराज गुप्त

भीड़तंत्र का हत्यारा बन जाने का दर्द

किसान आन्दोलन हो या गौरक्षा का मसला या आम जनजीवन की सामान्य-सी बातें- हिंसा एवं अशांति की ऐसी घटनाएं देशभर में लगातार हो रही हैं। महावीर, बुद्ध, गांधी के अहिंसक देश में हिंसा का बढ़ना न केवल चिन्ता का विषय है बल्कि गंभीर सोचनीय स्थिति को दर्शाता है। भीड़ द्वारा लोगों को पकड़कर मार डालने की घटनाएं परेशान करने वाली हैं। सभ्य समाज में किसी की भी हत्या किया जाना असहनीय है लेकिन जिस तरह से भीड़तंत्र के द्वारा कानून को हाथ में लेकर किसी को भी पीट-पीटकर मार डालना अमानवीयता एवं क्रूरता की चरम पराकाष्ठा है।

भीड़तंत्र के द्वारा हत्या की बढ़ती घटनाओं का कारण अफवाहें हैं, सोशल मीडिया की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन वे पहले भी फैलती थीं। खासकर धर्म पर आधारित अफवाहों के फैलने में देर नहीं लगती थी। बिना मोबाइल के दिल्ली में गणेश की मूर्ति के दूध पीने की अफवाह सैकड़ों किलोमीटर दूर तक घंटों में पहुंच गई और हजारों-लाखों लीटर दूध बर्बाद हो गया। एक मुस्लिम के घर के पास एक जानवर का कंकाल मिला। किसी पशु विशेषज्ञ ने यह पुष्टि तक नहीं की कि वह गाय का कंकाल था। किसी जांच से यह भी साबित नहीं हुआ था कि वह अगर गाय ही थी तो उसकी हत्या उस मुसलमान ने ही की। लेकिन भीड़ ने उस मुसलमान का घर जला डाला। साथ ही उस बूढ़े मुसलमान की भी जान ले ली। दरअसल यह हत्यारी मानसिकता को जो प्रोत्साहन मिल रही है उसके पीछे एक घृणा, नफरत, संकीर्णता और असहिष्णुता आधारित राजनीतिक सोच है। यह हमारी प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवस्था के चरमराने का भी संकेत है।

भीड़तंत्र का हिंसक, अराजक एवं आक्रामक होना अनुचित और आपराधिक कृत्य है। भीड़ कभी भी आरोपी को पक्ष बताने का अवसर ही नहीं देती और भीड़ में सभी लोग अतार्किक तरीके से हिंसा करते हैं। कभी-कभी ऐसी हिंसक घटनाएं तथाकथित राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक लोगों के उकसाने पर कर दी जाती है। ऐसे कृत्य से कानून का उल्लंघन तो होता ही है भारत की अहिंसा एवं विश्वबंधुत्व की भावना भी ध्वस्त होती है। यदि किसी व्यक्ति ने कोई अपराध किया है तो उसे सजा देने का हक कानून को है, न कि जनता उसको तय करेगी। अपराधी को स्वयं सजा देना कानूनी तौर पर तो गलत है ही, नैतिक तौर पर भी अनुचित है और ये घटनाएं समाज के अराजक होने का संकेत है। लेकिन यहां प्रश्न यह भी है कि व्यक्ति हिंसक एवं क्रूर क्यों हो रहा है? सवाल यह भी है कि हमारे समाज में हिंसा की बढ़ रही घटनाओं को लेकर सजगता की इतनी कमी क्यों है?

एक सभ्य एवं विकसित समाज में अनावश्यक हिंसा का बढ़ना विडम्बनापूर्ण है। ऐसे क्या कारण

महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के चंदगांव में सोशल मीडिया पर फैलाये जा रहे फर्जी मेसेज पर यकीन करके भीड़ द्वारा दो लोगों को पीट-पीट के हत्या कर दिये जाने का मामला सामने आया है। इससे पहले असम के कार्बी आंग्लोंग जिले में भीड़ ने बच्चा चोरी के संदेह में पेशे से साउंड इंजीनियर नीलोत्पल दास और गुवाहाटी के ही व्यवसायी अभिजीत की पीट-पीटकर हत्या कर दी। कुछ अर्से पहले दिल्ली में खुलेआम दो लड़कों को पेशाब करने से रोकने पर एक ई-रिक्शा चालक की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई। कभी गौमांस खाने के तथाकथित आरोपी को मार डाला जाता है, कभी किसी की गायों को वधशाला ले जाने के संदेह में पीट-पीटकर हत्या कर दी जाती है, कभी छोटी-मोटी चोरी करने वाले को मारा जाता है तो कभी बच्चा चोरी के संदेह में लोगों की हत्याएं की जाती हैं।

हर दिल जो हिंसा एवं अशांति की जमीं तैयार कर रहे हैं। देश में भीड़तंत्र हिंसक क्यों हो रहा है? मनुष्य-मनुष्य के बीच संघर्ष, द्वेष एवं नफरत क्यों छिड़ गयी है? कोई किसी को क्यों नहीं सह पा रहा है? प्रतिक्षण मौत क्यों मंडराती दिखाई देती है? ये ऐसे सवाल हैं जो नये बनते भारत के भाल पर काले धब्बे हैं। ये सवाल जिन्दगी की सारी दिशाओं से उठ रहे हैं और पूछ रहे हैं कि आखिर इंसान गढ़ने में कहां चूक हो रही है? यह किसी भारी चूक का ही परिणाम है कि झारखंड में बच्चा चोरी की अफवाहों के चलते क्रुद्ध भीड़ ने 6 लोगों को पीट-पीटकर मार डाला था। यह कहां का न्याय है? यह कहां की सभ्यता है? हत्या का शिकार कोई एक समाज या धर्म का व्यक्ति नहीं होता बल्कि सभी समुदायों के लोग इसका शिकार हो रहे हैं। तेजी से बढ़ता हिंसक दौर किसी एक प्रान्त का दर्द नहीं रहा। इसने हर भारतीय को जख्मी बनाया है। अब इन हिंसक होती स्थितियों को रोकने के लिये प्रतीक्षा नहीं, प्रक्रिया आवश्यक है। यदि समाज में पनप रही इस हिंसा को और अधिक समय मिला तो हम हिंसक वारदातें सुनने और निर्दोष लोगों की लाशें गिनने के इतने आदी हो जायेंगे कि वहां से लौटना मुश्किल बन जायेगा। इस पनपती हिंसक मानसिकता के समाधान के लिये ठंडा खून और ठंडा विचार नहीं, क्रांतिकारी बदलाव के आग की तपन चाहिए। आप कितने असुरक्षित हैं हम? निर्दोष मारा जा रहा है और अपराधी साफ-साफ बच निकलता है। राजनीति की छांव तले होने वाली भीड़तंत्र की वारदातें हिंसक रक्तक्रांति का कलंक देश के माथे पर लगा रही हैं चाहे वह एंटी रोमियो स्क्वायड के नाम पर हो या गौरक्षा के नाम पर। कहते हैं भीड़ पर किसी का नियंत्रण नहीं होता। वह आजाद है, उसे चाहे जब भड़काकर हिंसक वारदात खड़ी की जा सकती है। उसे राजनीतिक संरक्षण?मिला हुआ है जिसके कारण वह कहीं भी कानून को धत्ता बताते हुए मनमानी करती है। भीड़ इकट्ठी होती है, किसी को भी मार डालती है। जिस तरह से भीड़तंत्र का सिलसिला शुरू हुआ उससे तो लगता है कि एक दिन हम सब इसकी जद में होंगे। हिंसा एवं अराजकता की बढ़ती इन घटनाओं के लिये केकड़ावृत्ति की मानसिकता जिम्मेदार है। जब-जब जनता के निर्णय से राजनीतिक दल सत्ता से दूर हुए हैं, उन्होंने ऐसे ही अराजक एवं हिंसक माहौल निर्मित किये हैं। आज राजनेता अपने स्वार्थों की चादर ताने खड़े हैं अपने आपको तेज धूप से बचाने के लिये या सत्ता के करीब पहुंचने के लिये। सबके सामने एक ही अहम सवाल आ खड़ा है कि 'जो हम नहीं कर सकते वो तुम कैसे करोगे?' लगता है इसी स्वार्थी सोच ने, आग्रही पकड़ ने, राजनीतिक स्वार्थ की मनोवृत्ति ने देश को हिंसा की आग में झोंक रखा है।

राजनीतिक स्वार्थों के लिये हिंसा को हथियार बनाया जा रहा है। किसी न किसी विचारधारा से जोड़कर अपनी सेनाएं बना लेने की परम्परा विकसित की जा रही है, कोई भीम सेना बना रहा हैं तो कोई रावण सेना, कोई अपना ही रक्षक दल बना रहा तो कोई अल्पसंख्यकों की अपनी सेना गठित कर रहा है। बहुसंख्यक अपनी सेना बना रहा है तो हर गली-मौहल्ले में भी ऐसे ही संगठन हिंसा करने के लिये खड़े किये जा रहे हैं। भीड़तंत्र भेड़तंत्र में बदलता जा रहा है। इस लिहाज से सरकार को अधिक चुस्त होना पड़ेगा। कुछ कठोर व्यवस्थाओं को स्थापित करना होगा, अगर कानून की रक्षा करने वाले लोग ही अपराधियों से हारने लगेंगे तो फिर देश के सामान्य नागरिकों का क्या होगा? देश बदल रहा है, हम इसे देख भी रहे हैं। एक ऐसा परिवर्तन जिसमें अपराधी बेखौफ घूम रहे हैं और भीड़ खुद फैसला करने लगी है। भीड़तंत्र का अपराध में शामिल होना, उसे जायज ठहराना या फिर खामोशी से देखकर आगे बढ़ जाना हिंसा को बढ़ावा देना है। यदि इस प्रवृत्ति को तुरन्त रोका नहीं गया तो यह देश तबाह हो जाएगा। ऐसे हत्याकांड देश पर आत्मघाती हमला हैं। भारत का जनतंत्र आदमखोर भीड़तंत्र में परिवर्तित हो रहा है। इसे रोकना होगा और इसके लिए हम सभी को पहल करनी होगी। हिंसा ऐसी चिंनगारी है, जो निमित्त मिलते ही भड़क उठती है। इसके लिये सत्ता के करीबी और सत्ता के विरोधी हजारों तर्क देंगे, हजारों बातें करेंगे लेकिन यह दिशा ठीक नहीं है। जब समाज में हिंसा को गलत प्रोत्साहन मिलेगा तो उसकी चिंनगारियों से कोई नहीं बच पायेगा।

ललित गर्ग

(ये लेखक के अपने विचार है)